राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

तिथि–10 मार्च 2021
सृष्टि संवत्- १, ९६, ०८, ५३, १२१
युगाब्द-५१२१, अंक-१३६, वर्ष-१३
फाल्गुन विक्रमी २०७७ (मार्च 2021)
मुख्य संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य'
कार्यकारी संपादक : आचार्य सतीश
सम्पर्क सूत्र: 9350945482
Web: www.aryanirmatrisabha.com
E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com

ऋषि दयानन्द

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

मा नस्तोके तनये मा न आयौ मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। वीरान्मा नो रुद्र भामितो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे ॥ –ऋ० १। ८। ६। ३

व्याख्यान–(मा नः तोके) कनिष्ठ, मध्यम और ज्येष्ठ पुत्र, (आयौ) उमर, (गोषु) गाय आदि पशु (अश्वेषु) घोड़ा आदि उत्तम यान, [(वीरान्)] हमारी सेना के शूरों में, (हविष्मन्तः) यज्ञ के करनेवाले, इन में (भामितः) क्रोधित और (मा रीरिषः) रोषयुक्त होके कभी प्रवृत्त मत हों। हम लोग आपको (सदमित्त्वा हवामहे) सर्वदैव आपका आह्वान करते हैं। हे भगवन् ! रुद्र परमात्मन् ! आपसे यही प्रार्थना है कि हमारी और हमारे पुत्र, धनैश्वर्यादि की रक्षा करो ।।५१।।

सम्पादकीय

प्रतीकों का युग ....

यूं तो प्रतीकों का महत्त्व मानवीय सभ्यता के प्रारम्भिक काल से ही बना हुआ है, किन्तु जिस प्रकार वर्त्तमान काल में सभी विधाओं में, सभी व्यवहारों में सब कुछ प्रतीकात्मकता मात्र बना दिया गया है, निश्चय ही ऐसी प्रतीकात्मकता पुराकाल में देखी-सुनी नहीं जाती है। तनिक विचार कर देखिए- महिला दिवस, मातृ दिवस, बालिका दिवस यह तीन तो नारियों को ही केन्द्र में रखकर बनाये गये एवं मनाए जाते हैं। इसके अतिरिक्त मजदूर दिवस, किसान दिवस, सेना दिवस, विज्ञान दिवस, आदि 66 दिवस से अधिक दिवस मनाए जाते हैं, किन्तु प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि आखिर इन सब दिवसों का महत्तव क्या है? सार्थकता क्या है? अभी-अभी 8 मार्च को 'अन्तर्राष्ट्रिय महिला दिवस' मनाया गया है, प्रायः जब भी इस प्रकार के दिवस मनाये जाते हैं तब सदैव से यह प्रश्न भी मन में उठ खड़ा होता है कि आखिर इस दिवस का महत्त्व क्या है? सो महिला दिवस के सम्बन्ध में भी यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से उठा, तभी मेरी दृष्टि एक समाचार की ओर गयी। समाचार संयुक्त राज्य अमेरिका के पड़ोसी देश मैक्सिको से था कि- 'अन्तर्राष्ट्रिय महिला दिवस' पर वहाँ महिलाओं ने एक विशाल प्रदर्शन किया, जिसमें महिलाओं ने अपनी सुरक्षा की मांग करते हुए अपने राष्ट्राध्यक्ष के विरूद्ध जोरदार प्रदर्शन किया। जो राष्ट्राध्यक्ष महिलाओं की सुरक्षा के मुद्दे पर सत्ता में आए और फिर महिलाओं की सुरक्षा भूलकर अपनी सुरक्षा में लग गए। परिणाम स्वरूप 11 करोड़ की जनसंख्या वाला मैक्सिको जो कि संसार के सबसे शक्तिशाली देश संयुक्त राज्य अमेरिका की दक्षिणी सीमा पर स्थित है और मैक्सिको की ओर से होने वाले अवैध घुसपैठ रोकने के लिए अमेरिका के निवर्तमान राष्ट्रपति ट्रम्प एक दीवार का निर्माण करवाने के लिए संकल्पबद्ध थे, उसी मैक्सिको में महिलाओं की स्थिति यह है कि एक वर्ष में 16 सहस्र महिलाओं के साथ बलात्कार किया गया, औसतन प्रतिदिन 10 महिलाओं की हत्या की जाती है, अर्थात् वर्ष भर में 3650। हमारे इस करोड़ों वर्ष प्राचीन सभ्यता मूलक देश में भी वर्त्तमान में स्थिति ऐसी ही दयनीय दिखाई पड़ रही है। यूं तो महिला शब्द शेष अगले पृष्ठ पर ....

पिछले पृष्ठ का शेष .... का अर्थ ही 'पूज्या' होता है, किन्तु वर्त्तमान की बाजारवादी शोषणमूलक व्यवस्था में महिला पूज्या न होकर मात्र भोग्या बना दी गयी है, जहाँ वह नारियों के लिए उपयुक्त सामग्री को तो बेचती ही है, किन्तु नरों की उपभोग्य सामग्री को भी बेचने की जिम्मेदारी उसकी है। ऐसी नारी को केन्द्रित कर तीन-तीन दिवस विश्वभर में मनाए जाने का तब तक कोई औचित्य सिद्ध नहीं होता जब तब कि- नारी की गौरव गरिमा नारी को प्रदान नहीं की जाती है। सारे संसार मे कुल जनसंख्या का लगभग आधा भाग पुरुषों का है, तो लगभग आधा भाग महिलाओं का है। प्रत्येक व्यक्ति के निर्माण में महिला का योगदान सर्वप्रथम माता के रूप में सर्वविदित है, अत: - **''माता निर्माता भवति''** जैसे आर्ष वाक्य के साथ-साथ **''न मातु: पर दैवतम्''** जैसी लौकिक सूक्तियां भी संसारभर की सभी भाषाओं में, सभी शिक्षाओं में उपलब्ध हैं। पूर्वकाल में इन्हीं उपदेशों के अनुकूल हमारे सभ्य समाज में महिलाओं की स्थिति रही भी है। इसी प्रकार एक बहिन के रूप में, भार्या के रूप में और पुत्री के रूप में किसके जीवन में, किसके परिवार में महिलाओं का योगदान नहीं है? किन्तु फिर भी महिलाओं को अपनी गरिमा के लिए, अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए रोना, चीखना, चिल्लाना पड़े, अपनी सुरक्षा की मांग के लिए हथोड़े, लाइटर, गैस सिलेण्डर आदि आग्नेय वस्तुओं के साथ आन्दोलन करना पड़े तो निश्चित रूप से सभ्य समाज के लिए सोचनीय विषय है। जिसे किसी एक देश, किसी सीमित समाज के ऊपर नहीं छोड़ा जा सकता, अपितु सभी सभ्य जनों को इसके लिए अथक पुरुषार्थ करना होगा।

आर्य! आर्याओं! आर्य महासंघ के अन्तर्गत ''आर्या गुरुकुल'' करनाल में सम्प्रति 6,7 एवं 8 मार्च को आर्या (महिला) प्रवक्त्री कक्षा का आयोजन किया गया जिसमें 25 चयनित आर्या उपस्थित रहीं, जिन्हें तीन दिनों तक विभिन्न योग्यताओं से ओत-प्रोत कराया गया, इन महिलाओं की विशेषता यह थी कि वे सभी परिवारों को सम्भालने में मुख्य भूमिका का निर्वहन करने वाली थी अर्थात् अपने-अपने घरों की मुखिया और मुख्या होते हुए भी वे **''आर्या निर्माण''** के लिए भागीरथ प्रयत्न करने को उद्यत हैं, तो निश्चित रूप से यह सम्पूर्ण आर्य समाज के लिए एक उत्साह जनक शुभसूचना है। 8 मार्च **'अन्तर्राष्ट्रिय महिला दिवस'** के दिन यह प्रशिक्षण सम्पन्न हुआ। तो क्या यह भी प्रतीकात्मक था या कि इस प्रकार के प्रशिक्षणों की सतत आवश्यकता है? दूसरा प्रश्न यह कि उपदेशिका, प्रवक्त्री, आचार्या बनने के लिए कहाँ से कौन महिलाएं आगे आएंगी? इसका उत्तर यही है कि जैसे महिला का स्थान हमारे जीवन में प्रतीक मात्र नहीं अपितु नित्य, निरन्तर माता, बहिन, भार्या एवं पुत्री के रूप बना रहता है, ऐसे इन प्रशिक्षण सत्रों की आवश्यकता भी निरन्तर है, दूसरा प्रशिक्षण लेंगी कौन? इसका उत्तर प्रत्येक आर्या को स्वत: से पूछना चाहिए और प्रत्येक आर्य को अपने घर की माता, बहिन, भार्या एवं पुत्री से पूछना चाहिए! आपके पास जिम्मेदारी है। घर-परिवार, नौकरी आदि परेशानी है, रोग की, शोक की, पीड़ा की किन्तु ऐसा कौन है? जिसके ऊपर जिम्मेदारी नहीं है, जिसके शरीर में रोग न हो, पीड़ा न हो, इनसे उत्पन्न शोक न होता हो? किन्तु फिर भी मैं आगे बढ़ूंगी, मैं आर्या उपदेशिका, प्रवक्त्री और आचार्या बनूँगी। जब हमारी सभी आर्या इस प्रकार दृढ़ प्रतिज्ञा लेकर प्रतीकात्मक नहीं निरन्तर आगे बढ़ेंगी, तभी महिलाओं की उन्नति के द्वार खुलेंगे और महिलाओं को सार्थक जीवन की प्राप्ति होगी। अन्यथा इन प्रतीकों का क्या? प्रतीक आते और चले जाते हैं, समाज वहीं रह जाता है। आइए! इस समाज को बदलने का संकल्प लें।

-आचार्य हनुमत् प्रसाद, अध्यक्ष, आर्य महांसघ।

फाल्गुन

28 फरवरी - 28 मार्च-2021 ऋतु- वसन्त

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
फाल्गुन कृष्ण दशमी ऋषि दयानन्द जन्म दिवस 8 मार्च						पू॰ फाल्गुनी कृष्ण प्रतिपदा 28 फरवरी
उ॰ फाल्गुनी/हस्त कृष्ण द्वितीया/ तृतीया 1 मार्च	चित्रा कृष्ण चतुर्थी 2 मार्च	स्वाति कृष्ण पंचमी 3 मार्च	विशाखा कृष्ण षष्ठी 4 मार्च	अनुराधा कृष्ण सप्तमी 5 मार्च	ज्येष्ठा कृष्ण अष्ठमी 6 मार्च	मूल कृष्ण नवमी 7 मार्च
पूर्वाषाढ़ा कृष्ण दशमी 8 मार्च	उत्तराषाढ़ा कृष्ण एकादशी 9 मार्च	श्रवण कृष्ण द्वादशी 10 मार्च	धनिष्ठा कृष्ण त्रयोदशी 11 मार्च	शतभिषा कृष्ण चतुर्दशी 12 मार्च	पूर्वाभाद्रपदा कृष्ण अमावस्या 13 मार्च	उत्तराभाद्रपदा शुक्ल प्रतिपदा 14 मार्च
रेवती द्वितीया 15 मार्च	अश्विनी शुक्ल तृतीया 16 मार्च	अश्विनी शुक्ल चतुर्थी 17 मार्च	भरणी शुक्ल पंचमी 18 मार्च	कृत्तिका शुक्ल षष्ठी 19 मार्च	रोहिणी शुक्ल सप्तमी 20 मार्च	मृगशिरा शुक्ल सप्तमी 21 मार्च
आर्द्रा शुक्ल अष्टमी 22 मार्च	पुनर्वसु शुक्ल नवमी 23 मार्च	पुष्य शुक्ल दशमी 24 मार्च	आश्लेषा शुक्ल एकादशी 25 मार्च	मघा शुक्ल द्वादशी/ त्रयोदशी 26 मार्च	पू॰ फाल्गुनी शुक्ल चतुर्दशी 27 मार्च	उ॰ फाल्गुनी शुक्ल पूर्णिमा 28 मार्च

चैत्र

29 मार्च-27 अप्रैल 20219 ऋतु- वसन्त

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
हस्त कृष्ण प्रतिपदा 29 मार्च	चित्रा कृष्ण द्वितीया 30 मार्च	स्वाती कृष्ण तृतीया 31 मार्च	विशाखा/अनुराधा कृष्ण चतुर्थी 1 अप्रैल	ज्येष्ठा कृष्ण पंचमी/ षष्ठी 2 अप्रैल	मूल कृष्ण सप्तमी 3 अप्रैल	पूर्वाषाढ़ा कृष्ण अष्टमी 4 अप्रैल
उत्तराषाढ़ा कृष्ण नवमी 5 अप्रैल	श्रवण कृष्ण दशमी 6 अप्रैल	धनिष्ठा कृष्ण एकादशी 7 अप्रैल	शतभिषा कृष्ण द्वादशी 8 अप्रैल	पूर्वाभाद्रपदा कृष्ण त्रयोदशी 9 अप्रैल	पूर्वाभाद्रपदा कृष्ण चतुर्दशी 10 अप्रैल	उत्तराभाद्रपदा कृष्ण अमावस्या 11 अप्रैल
रेवती कृष्ण अमावस्या 12 अप्रैल	अश्विनी शुक्ल प्रतिपदा 13 अप्रैल	भरणी शुक्ल द्वितीया 14 अप्रैल	कृतिका शुक्ल तृतीया 15 अप्रैल	रोहिणी शुक्ल चतुर्थी 16 अप्रैल	मृगाशिरा शुक्ल पंचमी 17 अप्रैल	आर्द्रा शुक्ल षष्ठी 18 अप्रैल
पुनर्वसु शुक्ल सप्तमी 19 अप्रैल	पुनर्वसु शुक्ल अष्टमी 20 अप्रैल	पुष्य शुक्ल नवमी 21 अप्रैल	आश्लेषा शुक्ल दशमी 22 अप्रैल	मघा शुक्ल एकादशी 23 अप्रैल	पू॰ फाल्गुनी/उ॰ फाल्गुनी शुक्ल द्वादशी 24 अप्रैल	हस्त शुक्ल त्रयोदशी 25 अप्रैल
चित्रा शुक्ल चतुर्दशी 26 अप्रैल	चित्रा शुक्ल पूर्णिमा/ प्रतिपदा 27 अप्रैल		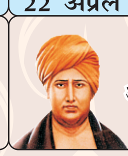 चैत्र शुक्ल प्रतिपदा नवसँवत्सर प्रारम्भ आर्य समाज स्थापना दिवस 13 अप्रैल		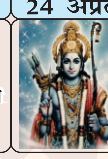 श्रीरामचन्द्र जयन्ती चैत्र शुक्ल नवमी 21 अप्रैल	

वर्ण व्यवस्थाः डॉ. अम्बेडकर बनाम वैदिक मत-९

-सोनू आर्य, हरसौला

मद्रास राज्य के तिन्नेवेल्ली जिले में व देखने योग्य लोगों का एक ऐसा वर्ग हैं, जिन्हें पूरड वन कहा जाता है। उनके बारे में ऐसा कहा जाता है कि उन्हें दिन में विचरण करने की इजाजत नहीं होती, क्योंकि उनका दर्शन भी अपवित्र माना जाता है। इन दुर्भाग्यशाली लोगों को रात्रि के समय कार्य करने के लिए मजबूर किया जाता है। वे अंधेरा होने पर अपने घर से निकलते हैं और तब वापस लोटते है, जब बिज्जू रीछ के समान किसी भी प्राणी की झूठी आवाज सुनते हैं। इनके अलावा दलितों के दर्शन व स्पर्श यात्र से अपवित्रता के भय के कारण उन्हें बर्तन बजाते हुए निकलना पड़ता था तथा भूमि पर थूकने की इजातत भी न होती थी। अतः उन्हें थूकने हेतु पात्र गले में लटकार व पीठ पर झाड़ू बांधकर चलना पड़ता था। डॉ. आम्बेडकर ने इनकी संख्या अपने समय में लगभग 795 लाख बताई है। इनके पतन और पराभव के लिए जिम्मेदार प्रपन्जी व स्वार्थी ब्राह्मणों ने अपवित्रता के भय से इनके उद्धार का विचार तक न किया और शुद्धि आदि आन्दोलनों तथा कुछ अन्य उद्धार कार्य जो आर्य समाज ने किए वह भी पर्याप्त साबित नहीं हुए। इस कारण वर्तमान समय तक भी थोड़ा-बहुत सुधार के अलावा वान्छित सम्मान व समर्थन उन्हें हिन्दुओं के द्वारा नहीं मिल पाया जिसकी परिणती वर्तमान राजनीति में ''जय भीम'' के नारे के रूप में हो रही है।

वैदिककालीन शूद्र का समाज में स्थान व व्यवहारः- उपरोक्त वर्णन में हम जाति की उत्पत्ति व कुछ जातियों की अमानवीय दशा का विवरण पढ़ चुके हैं किन्तु क्या वर्ण व्यवस्था में शूद्र की स्थिति इतनी दयनीय कभी रही है? विवेचन आवश्यक है वैसे तो पूरे विश्लेषण से स्पष्ट है कि विशुद्ध वर्ण व्यवस्था में विकृति हुई तो उससे जतियाँ निर्मित हुई हैं। अतः सब जातियों का मूल एक ही है। वर्तमान की लगभग सभी जातियों का मूल एक ही है। वर्तमान की लगभग सभी जातियों में पाए जाने वाले गोत्र भी यह सिद्ध करते हैं कि सब जाति एक मूल परिवार की वंशज हैं पांचाल राज्य का इतिहास पुस्तक पेज 117-119 पर लुहार, मिस्त्री, खात्री, कुम्हार आदि जातियों के गोत्रों की सूची दी है, जिनमें कुछ गोत्र दहिया, अत्रि, सिसोदिया, गोयल, भारद्वाज, चौहान, सोलंकी, गौतम, कात्यायन, कश्यप, कछवाह, शान्डिल्य, बडगुजर आदि हैं। इन गौत्रों का (अन्यों का भी) मिलान ब्राह्मण, यादव, गुजर, जाट, राजपूत, चमार, आदि के गोत्रों से करने पर यह सिद्ध होता है कि इन सब जातियों का मूल एक ही है।

वर्ण व्यवस्था में जिसने गुण, कर्म, योग्यता के आधार पर जिस वर्ण का चयन किया वे उस वर्ण के कहलाने लगे। बाद में विभिन्न कारणों से उनका ऊंचा नीयत वर्ण परिवर्तन होता रहा। किसी क्षेत्र में वही ब्राह्मण कहीं क्षत्रिय, कहीं वैश्य व कहीं शूद्र कहलाया। कालान्तर में जन्माधारित उनकी जाति रूढ़ हो गयी।

इनका रहन-सहन, खान-पान, आचार, व्यवहार, धर्म, रीति, नीति, सभ्यता व संस्कृति सब एक समान हैं। इनमें केवल वैवाहिक सम्बध नहीं होते, जिस दिन यह भी होने लगेगा उसी दिन से भारत में जातियों का नाश तथा भारतवर्ष का कल्याण भी प्रारम्भ हो जाएगा। अतः तर्क और तथ्यों से स्पष्ट है कि मूल तो सबका एक है किन्तु जैसा अनुचित आचरण आज दलित, अस्पृश्यों के साथ किया जाता है, क्या तब शूद्रों के साथ भी किया जाता था?

मनुस्मृति मे प्रक्षेपों की चर्चा की जा चुकी है, जिसके कारण बाद में व्यवस्थाएँ विकृत हुई। किन्तु मनु ने शूद्र सहित चारों वर्णों को सवर्ण माना है। चारों से भिन्न को असवर्ण (10/04/45) किन्तु बाद में शूद्र को असवर्ण कहा जाने लगा। इसी तरह शिल्पी, कारीगरों को वैश्य माना किन्तु आज उन्हें भी शूद्रकोटि में गिना जाता है। कृषि और पशुपालन को वैश्यों का कार्य माना किन्तु सदियों से ब्राह्मण और क्षत्रिय कृषि कार्य कर रहे हैं, पर उन्हे वैश्य नहीं माना गया। अतः यह विकृत व्यवस्था मनु की नहीं है। उन्होंने अपनी व्यवस्था में शूद्रों सहित चारो वर्णो को सवर्ण माना। किसी के साथ पक्षपात नहीं किया। मनुस्मृति, गौतम धर्मसूत्र तथा कोटिलीय अर्थशास्त्र को उद्धृत कर डॉ. आम्बेडकर ने भी शूद्र कौन पेज-76 पर शूद्रों को अनार्य नहीं अपितु आर्य सिद्ध किया है। वैदिक साहित्य में दस्यु उन अनार्यो के लिए आता है जो आर्यो से विपरीत आचरण करते थे किन्तु शूद्र वे लोग कहलाते थे जो वैदिक व्यवस्था और यम-नियम के अनुकूल आचरण करते थे। द्विजों के गलत आचरण के कारण पतित लोग भी शूद्र वर्ण में गिने जाते थे। अतः शूद्र समाज का आवश्यक भाग थे। वैदिक साहित्य में शूद्रों का नाम उस अपमान के साथ नहीं आता जैसा दस्युओं का आता है। वर्तमान में निम्नवर्ग के साथ जो अमानवीय व्यवहार हुआ वह विशुद्ध वर्णव्यवस्था में नहीं था क्योंकि शूद्र अस्पृश्य नहीं थे। स्वयं मनु ने शूद्रों के लिए उत्तम, उत्कृष्ट और शुचि जैसे विशेषणों का इस्तेमाल किया है। (मनु- 9/335)

क्रमश ....

संध्या काल

फाल्गुन-मास, वसन्त-ऋतु, कलि-5121, वि. 2077
(28 फरवरी 2021 से 28 मार्च 2021)
प्रातः कालः 6 बजकर 00 मिनट से (6.00 A.M.)
सांय कालः 6 बजकर 15 मिनट से (6.15 P.M.)

चैत्र-मास, वसन्त-ऋतु, कलि-5122, वि. 2078
(29 मार्च 2021 से 27 अप्रैल 2021)
प्रातः कालः 5 बजकर 45 मिनट से (5.45 A.M.)
सांय कालः 6 बजकर 30 मिनट से (6.30 P.M.)

सहज सरल सांख्य-१०

- आचार्य सतीश, दिल्ली

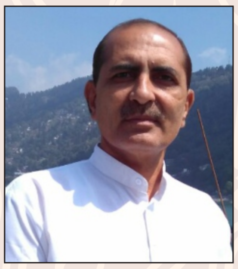

अहंकार क्या है?

अहं (मैं) की भावना का जो साधन है, अहं जिसकी वृत्ति है, वह अंहकार है।

अहंकार कारण है पाँच ज्ञानेन्द्रियों, पाँच कर्मेन्द्रियों, एक मन व पांच तन्मात्राओं अर्थात् सूक्ष्ममूत शब्द तन्मात्र, स्पर्श तन्मात्र, रूपतन्मात्र, रसतन्मात्र, गन्धतन्मात्र का।

इनमें से ग्यारह इन्द्रियों की प्रवृत्ति सात्विक अहंकार से होती है क्योंकि ये सत्वगुण की विशेषता ज्ञान और क्रिया की प्रकाशक हैं।

इन ग्यारह में पांच बुद्धिन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ और एक आन्तर इन्द्रिय मन है। आत्मा के ज्ञान और योग का साधन होने के कारण इनका नाम इन्द्रिय है।

क्या इन्द्रियों की उत्पत्ति पंचभूतों से नहीं हो सकती?

नहीं भूतों के निर्माण में तमोगुण की प्रधानता तो रहती है, लेकिन इन्द्रियाँ अर्थ प्रकाश होने से सत्वगुण प्रधान हैं। दूसरा श्रुति का भी यही मत है।

अग्नि आदि श्रेष्ठ पदार्थों में इन्द्रियों का लय तो दिखता है परन्तु उत्पत्ति उससे नहीं। क्योंकि जैसे जल गिरकर पृथ्वी में लय हो जाता है लेकिन उसकी उत्पत्ति उससे नहीं होती। यह लय केवल अदृश्यता की भावना से मान्य है वास्तविक कारण में नहीं। वास्तविक कारण में लय तो अहंकार में ही देखा गया है, अत: अहंकार से ही इन्द्रियों की उत्पत्ति है व श्रुति भी ऐसा ही मानती है।

इन्द्रियों की एक अन्य विशेषता है कि किसी इन्द्रिय का स्वयं अथवा अन्य किसी इन्द्रिय द्वारा ग्रहण नहीं होता। इन्द्रियों के अधिष्ठान गोलकों में इन्द्रिय प्रतीति एक भ्रान्ति है, वे तो इन्द्रियों के रहने के स्थान है इन्द्रिय नहीं। अत: इन्द्रिय, अतिइन्द्रिय हैं।

यदि एक ही इन्द्रिय मानकर शक्ति भेद से उसी इन्द्रिय द्वारा सभी विषयों का ग्रहण मान लिया जाए तो?

विषय ग्रहण के लिए शक्ति भेद मानने पर भी साधन की अनेकता सिद्ध हो जाती है, तब इन्द्रिय को एक नहीं कहा जा सकता। और जब ये ग्राह्य विषय के वर्गीकरण, शरीर रचना तथा क्रियाओं के आधार पर ग्यारह इन्द्रियाँ निश्चित की गई हैं तो कल्पना के आधार पर न्यून या अधिक बताना अप्रामाणिक है।

मन उभयात्मक है क्योंकि कोई भी इन्द्रिय मन के सहयोग के बिना अपने विषय में प्रवृत्त नहीं होती। आन्तर विषय के साथ सीधा सम्पर्क रहने से मन को आन्तर इन्द्रिय कहा जाता है।

बाह्य विषयों के लिए इन्द्रियों के साथ व आन्तर विषयों के साथ सीधा सम्पर्क होने से मन उभयात्मक है।

एक ही अहंकार से उपर्युक्त रूप में विविध इन्द्रियों का उत्पादन कैसे हो सकता है?

सत्व-तमस्-रजस् गुणों की विषयता अर्थात् न्यूनाधिकता की विशेषता से विभिन्न इन्द्रियों की उत्पत्ति हो जाती है। फिर मन जिसकी संगति में जाता है वैसी ही शक्ति प्राप्त कर लेता है।

ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों का विषय क्या है?

ज्ञानेन्द्रियों का विषय रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, शब्द आदि तथा कर्मेन्द्रियों का विषय बोलना, लेना-देना, पकड़ना, चलना, उत्पादन करना तथा उत्सर्जन है।

ये समस्त इन्द्रियाँ करण हैं, किसी के साधन हैं। इन्द्रियों के विषयों को ग्रहण करने वाला अथवा भोगने वाला आत्मा है।

तीन अन्त:करण अर्थात् महत् का कार्य निश्चय करना, अहंकार का अभिमान व मन का संकल्प मुख्य कार्य है। पांच प्राण अर्थात् प्राण, अपान, व्यान, समान, उदान, जो वायु रूप है सभी करणों का सीधा व्यापार है अर्थात् सामान्य वृत्ति है।

इन्द्रियों द्वारा कार्य क्रमवार होता है अर्थात् एक समय में एक ही इन्द्रिय का एक समय में व्यापार है। मन चूंकि मध्यम परिमाण है अत: वह इन्द्रियों के साथ युगपत नहीं हो सकता अर्थात् एक समय में कई इन्द्रियों के साथ नहीं होता। कई बार इन्द्रियों का व्यापार इतनी शीघ्रता से होता है कि पकड़ा नहीं जा सकता। लेकिन होता वहां पर भी क्रमवार ही है। मन के साथ अहंकार और फिर बुद्धि का सम्पर्क हुए बिना किसी भी अर्थ निश्चय होना असम्भव है।

बाह्य इन्द्रियों द्वारा जो विषय उपस्थित किया जाता है अन्त:करण का व्यापार (कर्म) उसी पर आश्रित रहता है, क्योंकि अन्त: करण, सीधे बाह्य विषय के सम्पर्क में नहीं आता। कर्मेन्द्रियाँ का कर्म-क्रिया रूप होता है जिसका सीधा प्रभाव आत्मा तक नहीं पहुँचता, प्रत्युत ज्ञानेन्द्रियों द्वारा पहुँचता है।

अब जो इन्द्रियवृत्तियाँ आत्मा के अनुकूल अनुभूति की जनक हैं- अक्लिष्ट अर्थात् दुख न देने वाली और इसके विपरीत आत्मा के प्रतिकूल हैं वे क्लिष्ट अर्थात् दुख देने वाली। आत्मा का समस्त सांसारिक सुख-दु:ख, भोग, इन्ही पाँच इन्द्रियवृत्तियों द्वारा सम्पन्न होता है। यदि समस्त बाह्य वृतियों को क्लिष्ट वर्ग में डाल दिया जाता है तो केवल समाधि वृत्तियाँ ही अक्लिष्ट रह जाती हैं।

तो इन वृत्तियों के शान्त हो जाने पर आत्मा की क्या स्थिति होती है?

जब तक ये बाह्यवृत्तियाँ रहती हैं, तब तक आत्मा वृत्त्विस्वरूप रहता है लेकिन जब ये सभी वृत्तियाँ शान्त हो जाती हैं अर्थात् आत्मा पर बाह्य विषयों का प्रभाव नहीं रहता है तो आत्मा स्वरूप में अवस्थित होता है। चेतन में अचेतन व अचेतन में चेतन की भावना न रहकर चेतन में चेतन की भावना होना भी आत्मा का स्वरूप में अवस्थित होना है।

जैसे स्फटिक मणि के फूल के सम्पर्क में आने पर फूल की लाल, नीली, पीली, प्रतीति होती है, फूल के हट जाने पर स्वच्छ प्रतीत होने लगती है। जबकि उसके वास्तविक स्वरूप में कोई अन्तर नहीं आता है। इसी प्रकार चेतन स्वरूप, आत्मा समाधि लाभ द्वारा इन्द्रियवृतियों से हटकर अपने चेतनस्वरूप का साक्षात्कार करता है। वृतिसरूपता में भी उसका चेतन स्वरूप तो बना रहता है।

क्रमश ....

आओ यज्ञ करें!

अमावस्या	13 मार्च	दिन-शनिवार	मास-फाल्गुन	ऋतु-वसन्त	नक्षत्र-पूर्वाभाद्रपदा
पूर्णिमा	28 मार्च	दिन-रविवार	मास-फाल्गुन	ऋतु-वसन्त	नक्षत्र-उ.फाल्गुनी
अमावस्या	11,12 अप्रैल	दिन-रवि, सोम	मास-चैत्र	ऋतु-वसन्त	नक्षत्र-उ.भाद्र,रेवती
पूर्णिमा	27 अप्रैल	दिन-मंगलवार	मास-चैत्र	ऋतु-वसन्त	नक्षत्र-चित्रा

गृहस्थ सम्बन्ध : भाग-२०

- आचार्य संजीव आर्य, मु०नगर

स्वधा, श्रद्धादि गुणों से युक्त गृहस्थों को किन संसाधन व कर्तव्यों को प्राप्त होना चाहिये-

ओजश्च तेजश्च सहश्च बलं च वाक् चेन्द्रियं च श्रीश्च धर्मश्च॥
बलं च क्षत्रं च राष्ट्रंच विशश्च त्विषिश्च यशश्च वर्चश्च द्रविणं च॥
आयुश्च रूपं च नाम च कीर्तिश्च प्राणश्चापानश्च चक्षुश्च श्रोत्रंच॥
पयश्च रसश्चान्नं चान्नाद्यं च ऋतं च सत्यं चेष्टं च पूर्तं च प्रजा च पशवश्च॥

(ओजश्च) हे मनुष्यों! तुम जो पराक्रम और इस की सामग्री, स्तुति-निन्दा, हानि-लाभ तथा शोकादि का सहन और इसके साधन, बल और इसके साधन, सत्य प्रियवाणी और इसके अनुकूल व्यवहार, शान्त धर्मयुक्त अन्त:करण और शुद्धात्मा तथा जितेन्द्रियता, लक्ष्मी सम्पत्ती और इसकी प्राप्ति का धर्मयुक्त उद्योग, पक्षपातरहित न्यायाचरण वेदोक्त धर्म और जो इसके साधन वा लक्षण हैं। उनको तुम प्राप्त होके इन्हीं में सदा वर्ता करो।

(ब्रह्म च) हे गृहस्थादि मनुष्यों! तुम को योग्य है कि पूर्णविद्यादि शुभ गुणयुक्त मनुष्य और सब के उपकारक शमदमादि गुणयुक्त ब्रह्मकुल, विद्यादि उत्तम गुणयुक्त तथा विनय और शौर्यादि गुणों से युक्त क्षत्रियकुल राज्य और उसका न्याय से पालन, उत्तम प्रजा और उसकी उन्नति सद्विद्यादि से तेज आरोग्य शरीर और आत्मा के बल से प्रकाशमान और इसकी उन्नति से कीर्तियुक्त तथा इसके साधनों को प्राप्त हुआ करो। पढ़ी हुई विद्या का विचार और उसका नित्य पढ़ना, द्रव्योपार्जन उस की रक्षा और धर्मयुक्त परोपकार में व्यय करने आदि कर्मों को सदा किया करो।

हे स्त्रीपुरुषों! तुम अपना **(आयुश्च)** जीवन बढाओ और सब जीवन में धर्मयुक्त उत्तम कर्म ही किया करो। विषयासक्ति, कुपथ्य, रोग और अधर्माचरण को छोड़ के अपने स्वरूप को अच्छा रखो। और वस्त्राभूषण भी धारण किया करो। नामकरण मे लिखे प्रमाणे शास्त्रोक्त संज्ञाधारण और उसके नियमों को भी। सत्याचरण से प्रशंसा का धारण और गुणों में दोषारोपणरूप निन्दा को छोड़ दो। चिरकाल पर्यन्त जीवन का धारण और उसके युक्ताहार विहारादि साधन, सब दु:ख दूर करने का उपाय और उसकी सामाग्री प्रत्यक्ष और अनुमान उपमान व शब्द प्रमाण और उसकी सामग्री को धारण किया करो।

हे गृहस्थ लोगो! **(पयश्च)** उत्तम जल, दूध और इसका शोधन और युक्ति से सेवन, घृत, दूध, मधु आदि और इनका युक्ति से आहार विहार, उत्तम चावल आदि अन्न और उसके उत्तम संस्कार किये हुए खाने के योग्य पदार्थ और उसके साथ उत्तम दाल, शाक, कढ़ी आदि, सत्य मानाना और सत्य मनवाला, सत्य बोलना और बुलवाना, यज्ञ करना और कराना, यज्ञ की सामाग्री पूरी करना तथा जलाशय और आरामवाटिका आदि का बनाना और बनवाना प्रजा की उत्पत्ति पालन और उन्नति सदा करनी तथा करानी, गाय आदि पशुओं का पालन और उन्नति सदा करनी तथा करानी तथा करानी चाहिए।

उपरोक्त मन्त्र और ऋषि दयानन्द द्वारा प्रदत्त उनके अर्थ पर विचार करने पर कुछ गुण, कुछ कर्म, कुछ साधन और लक्ष्य बताये गये हैं। एक बार क्रमश: उन्हें समझने का प्रयत्न करते हैं- चाहे घर हो, समाज हो, और चाहे राष्ट्र हो सभी के चलाने के लिए पराक्रमी होने की आवश्यकता से कोई स्वयं को अलग नहीं कर सकता, इस कर्मशीलता के विषय में आगे भी कहा जायेगा अत: यहाँ इतना ही कि यह गृहस्थियों ने लिए प्रथम साधन के रूप में है। पराक्रम मात्र हवाई किला बनाना नहीं हो सकता अर्थात् कोई व्यक्ति करना चाहे किन्तु उसे संसाधन ही प्राप्त न हो सकें तो वह कैसे अपने पराक्रम को कैसे सिद्ध करेगा अत: उसके साधन तो चाहिए ही चाहिए। पराक्रम के प्रभाव का नाम ही तेज है उदाहरण के लिए आपने अपनी वीरता सिद्ध कर रखी है तो समाज के समक्ष उसे बार-बार सिद्ध नहीं करना पड़ता अपितु आपकी पूर्व सिद्ध वीरता के कारण समाज आदरपूर्वक आपकी बात मान लेता है इस प्रकार के प्रभाव का नाम ही तेज है। अच्छे सहयोगी जन जो इसे बनाते और बढ़ाते हैं वे ही इसकी सामग्री हो सकते हैं अत: सनातनधर्मावलम्बियों को पराक्रमी और तेजस्वी होना चाहिए हमारे पूर्वज ऐसे रहे भी हैं। साथ-साथ ही हमें सहनशीलता का गुण भी अपने भीतर रखना ही होगा क्योंकि जो सहनशील नहीं होते वे अपने प्रभाव का दुरुपयोग करने लगते हैं और फिर समाज उनकी अवहेलना करना आरम्भ कर देता है अत: समाज निर्माण की व्यवस्था में यह सहनशीलता रूपी गुण एक योजक या जोड़ने वाले पदार्थ की भाँति कार्य करता है। स्तुति, निन्दा, हानि, लाभ व शोकादि का सहन करना आवश्यक है। वास्तव में यही क्षमा है, यही धैर्य है, यही तप है। थोड़े-थोड़े से अन्तर से इसी को कहा गया है। इसके बिना अहिंसा का पालन भी संभव नहीं। किन्तु यह जब अति को प्राप्त होती है। तो मनुष्य के कायर बनने का डर खड़ा रहता है। उसका पराक्रमरूपी गुण विस्मृत होकर मात्र वह सहनशीलता को ओढ लेता है; तब स्थिति विकट हो जाती है। बड़ी हानि तो तब होती है जब समाज में यह परम्परा बन जावे, इसलिए लोकभाषा के कवि रामधारी सिंह दिनकर ने कहा है-

क्षमा शोभती उस भुजंग को जिसके पास गरल हो।
उसको क्या जो दन्तहीन, विषरहित, विनीत सरल हो॥

अर्थात् पराक्रम और तेज के बिना सहनशीलता कायरता ही होती है। ये दोनों ही इसके साधन भी हैं। उपरोक्त तीनों के साथ-साथ बल है जिसे सदैव बढ़ाते रहना चाहिए। शारीरिक, सामजिक व आत्मिक तीनों प्रकार के बल का बढ़ाना व उसके साधनों का भी बढ़ाना हमारा कर्तव्य है। बल के साधनों की चर्चा कुछ पहले कर चुके हैं कुछ अवसरानुकूल करते रहेंगे।

इन संसाधनों से युक्त होने के पश्चात् सत्य प्रिय वाणी और उसी के अनुकूल अर्थात् सत्य प्रिय व्यवहार को हमें अपना स्वभाव ही बना लेना चाहिए। मनुष्य थोड़ा-थोड़ा करके असत्य की आदत डाल लेता है और यह एक व्यसन की भाँति धीरे-धीरे सुख के तन्तुओं की श्रृंखला को तोडकर मनुष्य के सुख श्रोतों को ही बन्द कर देता है अत: सत्य व्यवहार और वह भी प्रिय इसे करने के लिए नकलीपन से काम नहीं चल सकता। देर-सवेर वह पकड़ा जाता है पुन: अप्रसिद्धि और दु:ख सहना पड़ता है। इस प्रकार का व्यवहार उन्हीं को शोभता व उन्हीं में स्थिर रहता है जिनका अन्त:करण शुद्ध, शान्त और धर्मयुक्त हो जो जितेन्द्रिय हों। अन्त:करण में कपट रखने वाला मनुष्य भीतर-भीतर द्वेषाग्नि से जलता रहता है। वह ऊपर से बगुला भक्त दिख सकता है समाज के समक्ष वास्तिविकता प्रकट होने से पहले तक अपना आडम्बर अपना ढ़ोग बनाए रख सकता है किन्तु सत्य के प्रकट होते ही उसका हवा महल ढ़ह जाता है तब वह दु:खी होकर गालियाँ दिया करता है। अपना दोष दूसरों पर मढने का प्रयत्न करता है। अथवा यह दर्शाने का प्रयास करता है कि दूसरे भी तो ऐसे ही हैं किन्तु पुन: इसका कोई विश्वास नहीं करता अखिर **'काठ की हाँडी बार-बार चूल्हे पर नहीं चढ़ा करती है।'**

धन सम्पदा अत्यन्त महत्वपूर्ण साधन है अधिकांश समाज तो इसे जीवन लक्ष्य ही समझ बैठता है इसी कारण नीति कहती है। **मनुष्य अर्थस्य दास:।** हो भी क्यों ना, सारे सुख तो अर्थ से ही आते दिखाई पड़ते हैं अत: धन प्राप्त करना ही चाहिए अन्यथा गुण भी दोष बन जाते हैं या प्रकट ही नहीं हो पाते हैं इसीलिए भर्तृहरि कहते हैं- **सर्वेगुणा: काञ्चनमेवाश्रयन्ति।** लेकिन ऋषि हमे सावधान करते हैं कि धन को प्राप्त करने का जो उद्योग या प्रयत्न हो वह धर्मयुक्त होना चाहिए। जो कि वेदोक्त है पक्षपात नहीं करता और न्याय ही करता है। संगठन, आर्य समूह, आर्य समाज व स्वतंत्र आर्य राष्ट्र इस धर्म का सबसे बड़ा साधन है।

क्रमश ....

गौकरुणानिधिः - गौ आदि पशुओं की रक्षा के लिये ऋषि का संदेश

ऋषि दयानन्द ने वेद के सिद्धान्तों को जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए अन्य कार्यों के साथ-साथ एक पूर्णकालिक लेखक के रूप में भी अनेकों ग्रन्थों की रचना की है। उन्होंने विशुद्ध व्याकरण के ग्रन्थों से लेकर वेदभाष्य तक व सत्यार्थ प्रकाश जैसे कालजयी ग्रन्थ से लेकर गायादि पशुओं की रक्षा व उपयोगिता के लिए गौकरुणानिधि जैसी सामान्य जन के लिए भी अत्यन्त उपयोगी पुस्तकों की रचना की है। ऋषि ने इस पुस्तक में गायादि पशुओं के पूरे अर्थशास्त्र को, उनकी उपयोगिता को दर्शाया है तथा समीक्षा भाग में मांसाहार व मद्यपान आदि की निस्सारता व हानियों को दर्शाया है। वहीं दूसरी ओर नियमादि देकर कृषि तथा पशुओं की उन्नति का मार्ग प्रदर्शित किया है।

यहाँ प्रस्तुत है गौकरुणानिधि पुस्तक, आईये इसका स्वाध्याय करते हैं। ध्यान से पढ़ें तथा विचार करें कि यदि हम ऋषि के बताए अनुसार गायादि पशुओं की रक्षा करते हैं, उनका उपयोग लेते हैं तो न केवल पूरे राष्ट्र को अपितु एक एक व्यक्ति व एक एक परिवार स्मृद्धि को प्राप्त हो सकता है। यही मार्ग हमारी आर्थिक उन्नति का मूल है तथा इसको अपनाकर हम पाप से भी बच सकते हैं।

गतांक से आगे ...

मिश्रित नियम

२५-सब 'गोरक्षक-सभासदों' की सम्मति निम्नलिखित दशाओं में ली जावे-

१- अन्तरङ्गसभा का यह निश्चय हो कि किसी साधारणसभा के सिद्धान्त पर निश्चय न करना चाहिये, किन्तु 'गोरक्षक-सभासदों' की सम्मति जाननी चाहिए।

२-सब गोरक्षक-सभासदों का पांचवाँ वा अधिक अंश इस निमित्त मन्त्री के पास पत्र लिख भेजे।

३- जब बहुत-से व्यय-सम्बन्धी वा प्रबन्धसम्बन्धी नियम अथवा व्यवस्थासम्बन्धी कोई मुख्य विचारादि करना हो। अथवा जब अन्तरङ्गसभा सब 'गोरक्षक-सभासदों' की सम्मति जानना चाहे।

२६-जब किसी सभा में थोड़े-से समय के लिए कोई अधिकारी उपस्थित न हो, तब उसके स्थान में उस समय के लिए योग्यपुरुष को अन्तरङ्गसभा नियत कर सकती है।

२७-यदि किसी अधिकारी के स्थान पर वार्षिक साधारण सभा में कोई पुरुष नियत न किया जावे, तो जब तक उसके स्थान नियत न किया जाए, वही अधिकारी अपना काम करता रहे।

२८-सब सभाओं और उपसभाओं का वृत्तान्त लिखा जाया करे। और उसको सब गोरक्षकसभासद् देख सकते हैं।

२९-सब सभाओं का कार्य तब आरम्भ हो, जब न्यून-से-न्यून एक तिहाई सभासद् उपस्थित हों।

३०-सब सभाओं और उपसभाओं के सारे काम बहुपक्षानुसार निश्चित हों।

३१-आय का दशांश समुदाय धन में रक्खा जावे।

३२-सब गोरक्षक और गोरक्षक-सभासदों को इस सभा की उपयोगी वेदादिविद्या जाननी और जनानी चाहिए।

३३-सब गोरक्षक और गोरक्षक-सभासदों को उचित है कि लाभ और आनन्द समय में सभा की उन्नति के लिए उदारता और पूर्ण प्रेमदृष्टि रखें।

३४-सब गोरक्षक और गोरक्षक-सभासदों को उचित है कि शोक और दुःख के समय में परस्पर सहायता करें। और आनन्दोत्सव में निमन्त्रण पर सहायक हों, छोटाई-बड़ाई न गिनें।

३५-कोई गोरक्षक भाई किसी हेतु से अनाथ, वा किसी की स्त्री विधवा, अथवा सन्तान अनाथ हो जावे, अर्थात् उनका जीवन न हो सकता हो, और यदि 'गोकृष्यादिरक्षिणी सभा' उनको निश्चित जान ले, तो यह सभा उनकी रक्षा में यथाशक्ति यथोचित प्रबन्ध करे।

३६-यदि गोरक्षक-सभासदों में किन्हीं का परस्पर झगड़ा हो, तो उनको उचित है कि वे आपस में समझ लेवें। वा गोरक्षक-सभासदों की न्याय- उपसभा द्वारा उसका न्याय करालें। परन्तु अशक्यावस्था में राजनीति द्वारा भी न्याय करा लेवें।

३७-इस गोकृष्यादिरक्षिणी सभा को व्यवहार में जितना-जितना लाभ हो, वह-वह सर्वहितकारी काम में लगाया जावे। किन्तु यह महाधन तुच्छ कार्य में व्यय न किया जावे। और जो कोई इस गोकृष्यादि की रक्षा के लिए जो धन है, उसको चोरी से अपहरण करेगा, वह गोहत्या के पाप लगने से इस लोक और परलोक में महादुःखभागी अवश्य होगा।

३८-सम्प्रति इस सभा के धन का व्यय गवादि पशु लेने, उनका पालन करने, जङ्गल और घास के क्रय करने, उनकी रक्षा के लिए भृत्य वा अधिकारी रखने, तालाब, कूप, बावड़ी अथवा बाड़ा के लिये व्यय किया जावे। पुनः अत्युन्नत होने पर सर्वहित कार्य में भी व्यय किया जावे।

३९-सब सज्जनों को उचित है कि इस गोरक्षक धन आदि समुदाय पर स्वार्थ-दृष्टि से हानि करना कभी मन में भी न विचारें। किन्तु यथाशक्ति इस व्यवहार की उन्नति में तन-मन-धन से सदा प्रयत्न किया ही करें।

४०-इस सभा के सब सभासदों को यह बात अवश्य जाननी चाहिए कि जब गवादि पशु रक्षित होके बहुत बढ़ेंगे, तब कृषि आदि कर्म और दुग्ध-घृत आदि की वृद्धि होकर सब मनुष्यादि को विविध सुख-लाभ अवश्य होगा। इसके बिना सबका हित सिद्ध होना सम्भव नहीं।

४१-देखिए, पूर्वोक्त रीत्यनुसार एक गौ की रक्षा से लाखों मनुष्यादि को लाभ पहुँचाता, और जिसके मारने से उतने ही की हानि होती है, ऐसे निकृष्ट कर्म के करने को आप्त विद्वान् कभी अच्छा न समझेगा।

४२-इस सभा के जो पशु प्रसूत होंगे, उन-उन का दूध एक मास तक उसके बछड़े को पिलाना, और अधिक उसी पशु को अन्न के साथ खिला देना चाहिए। और दूसरे मास में तीन स्तनों का दूध बछड़े को देना, और एक भाग लेना चाहिए। तीसरे मास के आरम्भ से आधा दूध लेना और आधा बछड़े को तब तक दिया करें कि जब तक गाय दूध देवे।

४३-सब सभासदों को उचित है कि जब-जब किसी को स्वरक्षित पशु देवे तब-तब न्यायनियमपूर्वक व्यवस्थापत्र ले और देकर। जब वह पशु असमर्थ हो जाये, उसके काम का न रहे, और उसके पालन करने में सामर्थ्य न हो, तो अन्य किसी को न दे, किन्तु पुनरपि सभा के अधीन करे।

क्रमश ....

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

मेरा इस सत्र का अनुभव बहुत ही अच्छा रहा। मैंने इस सत्र के माध्यम से अपने परिवार, राष्ट्र के बारे में जाना। मैंने प्राणायाम तथा उपासना को अच्छी प्रकार से तथा प्रयोगात्मक विधि के द्वारा सीखा। मैंने इस सत्र के माध्यम से सबसे महत्वपूर्ण बात अपने राष्ट्र की सीमाओं के बारे में विस्तार से समझा। मैं आचार्या सुशीला जी का हृदय से धन्यवाद करती हूँ।

नाम : शिवानी आर्या, आयु : 20 वर्ष, योग्यता : बी.ए., कार्य : छात्रा, पता : दादूपुर रोड़ान, हरियाणा।

मुझे इस सत्र में जीवन जीने की असली कला का पता चला है और वेदों के बारे में ज्ञान प्राप्त हुआ है। मैं आर्या बनना चाहती हूँ और अपने परिवार को भी इस रास्ते पर लाना चाहती हूँ। मैं अपने बच्चों के लिए सत्र चाहती हूँ जिस से उन्हें भी ज्ञान की प्राप्ति हो।

नाम : ईशा आर्या, आयु : 30 वर्ष, योग्यता : एम.ए., कार्य : कॉउंसलर, पता : सैक्टर 20, चण्डीगढ़।

दो दिन के सत्र में हमे काफी अनुभव हुए हैं। सर्वप्रथम ईश्वर के बारे में ज्ञात हुआ कि वह सत्ता परमात्मा की है जो निराकार है। अपने बारे में कि नारी में अनन्त शक्ति का संसार है वह केवल घर तक ही सीमित न रहकर और भी कई कार्य कर सकती है। वेद तो हम जानते थे परन्तु विस्तार से आज ही प्राप्त हुआ कि वेद ही हमारे लिए सर्वस्व हैं। काफी धारणाएँ मेरी भंग हुई हैं। समाज की कई बुराईयों का पता चला जिनको हम सब समझे हुए थे, वे सब धारणाएँ टूटी, जैसे भूत-प्रेत का आडम्बर। सबसे बड़ी बात देश के, राष्ट्र के बारे में जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई। उपासना की पद्धति के बारे में भी पता चला।

नाम : मधु पाहवा, आयु : 54 वर्ष, योग्यता : एम.ए., कार्य : व्यवसाय, पता : पिंजौर, पंचकुला, हरियाणा ।

मैं संजना पुत्री श्री सुरेश कुमार इस दो दिवसीय आर्य सत्र लगाकर स्वयं को अंधकारमय जीवन से दूर कर प्रकाश अर्थात् ज्ञान की ओर अग्रसर होने के लिए प्रेरित हुई हूँ। मैं अपने जैसे छात्रों को आर्य बनने के लिए प्रेरित करती हूँ और अन्य विद्यार्थियों व सहयोगियों को भी इस उन्नति की ओर बढ़ने के लिए अग्रसर करूँगी।

नाम : संजना, आयु : 25 वर्ष, योग्यता : एम.ए., कार्य : छात्रा, पता : करनाल, हरियाणा।

मैं इन दो दिनों में सत्र के दौरान आचार्या जी आपके विचारों से विशेष रूप से प्रभावित हुई हूँ। मैंने यहाँ आकर बहुत सारी बातों को सीखा जो जीवन के लिए बहुत जरूरी है।

आज मैंने धार्मिक, राष्ट्र निर्माण, वेदों के महत्व के बारे में बहुत सीखा है, जिन बातों से मैं अभी तक अनजान थी। मैं अपने राष्ट्र निर्माण में आर्या निर्माण के लिए आपके विचारों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए सहयोग दूँगी, ताकि देश फिर से आर्यावर्त्त बन सके।

नाम : ममता मित्तल, आयु : 30 वर्ष, योग्यता : परास्नातक, पता : रोहिणी, नई दिल्ली।

आचार्य अशोकपाल जी ने मुझे यह सत्र लगाने के लिए प्रेरित किया और मुझे यहाँ आकर बहुत अच्छा अनुभव हुआ। पहले दिन के सत्र में मेरी ईश्वर के प्रति बहुत सी शंकाओं का समाधान हुआ। हमें किस ईश्वर की उपासना करनी चाहिए और ईश्वर के गुणों का पता चला। मेरा बहुत से अंधविश्वासों से विश्वास उठा। दूसरे दिन के सत्र में ईश्वर की उपासना की विधिओं का पता चला और बहुत से आर्य सिद्धान्तों से अवगत करवाया गया। राष्ट्र प्रेम की भावना को जागरूक हुई। मैं अपना अनुभव अवश्य ही अपने घर, ऑफिस में शेयर करुँगी ताकि वो भी अगले सत्र में भागी बने।

नाम : नीरज राणा, आयु : 28 वर्ष, योग्यता : एम.सी.ए., कार्य : क्लर्क, पता : सैक्टर 26, चण्डीगढ़

इस सत्र का अनुभव शब्दों में करना कुछ असंभव सा है। ज्यादा ना कहते हुए बस इतना कहना चाहूँगा के आज से यद्यपि अभी से मैं आर्य हूँ और आर्यो की दिल से इज्जत करता हूँ। मैं ये नहीं कहता कि मेरा परिवार या अन्य सभी लोग भी मेरे साथ आर्यावर्त्त अपनाएंगे परन्तु मैं आर्य हूँ, आज से अपितु अभी से।

मेरी बोलने की बहुत ही अच्छी क्षमता है। मेरी बुलंद आवाज के साथ 3 भाषाओं का ज्ञान है यद्यपि मैं प्रवक्ता बनकर आर्य के महान कार्यो में सहयोग करुँगा।

नाम : उज्जवल , आयु : 16 वर्ष, योग्यता : 11, कार्य : विद्यार्थी, पता : निवाड़ी, मोदीनगर।

अति उत्तम, इस प्रशिक्षण सत्र में सभी प्रकार के आदर्श सिद्धान्तों से मैंने यह सीखा कि वास्तव में राष्ट्र एवं स्व का निर्माण आर्य बनकर ही किया जा सकता है। इसलिए मैं आप को यह विश्वास दिलाता हूँ कि आगे स्वयं के सभी कार्य आर्य सिद्धान्तों के द्वारा सिद्ध किये जाएंगे। देश से बड़ा कुछ नहीं लेकिन ईश्वर, आत्मा, धर्म एवं सही शिक्षा का ज्ञान होना अति आवश्यक है। इस आत्मिक ज्ञान की मुझे समझाने के लिए आपका अति धन्यवाद!

नाम : प्रवीण कुमार, आयु : 33 वर्ष, योग्यता : एम.ए, बी.एड., कार्य : अध्यापक, पता : पुरनपुर नवादा, बागपत, उत्तर प्रदेश।

हमारा अनुभव है कि हम सबको एक मत होकर एक ही ईश्वर पूजा व उपासना करना चाहिए तभी हम अपने और अपने परिवार, समाज, गांव, शहर, राज्य, देश की सेवा कर सकते हैं। हम सब को जातिवाद को छोड़कर सबको अपना भाई, बहन, माँ और मित्र बन्धु बनाकर आर्य बनाना है। तभी हम आज के समय में अपने प्राचीन आर्यावर्त (विश्वगुरु) देश को पुन: स्थापित कर पायेंगे अन्यथा नहीं। अत: हम सम्पूर्ण संसार को आर्य बनाने का मिशन लेकर चलने के लिए अपने उत्तम चरित्र का निर्माण करना होगा व अपनी प्राचीन गुरुकुलों की वैदिक शिक्षा को अपनाना ही है, अपने पूर्वजों जैसे श्रीराम, श्रीकृष्ण इत्यादि के जीवन चरित्र को पढ़कर व सुनकर व विचार मनन कर उनके गुणों (आचरणों) को अपने वास्तविक जीवन में लाना होगा तभी हमारा कल्याण सम्भव है और जीवन पर्यन्त यह बात स्मरण रखनी ही होगी की हमें पुन: अपने भारत देश को आर्यावर्त्त व विश्व गुरु बनाना है।

अपनी उम्र व अपने से बड़ों व छोटे लोगों को आर्य प्रवचन कार्यक्रमों सम्मिलित होने व करने हेतु पूर्ण रूप से प्रयासरत रहने की ललक (लगन) है।

नाम : रामखिलावन, आयु : 28 वर्ष, योग्यता : एम.ए., कार्य : जनसेवा केन्द्र संचालक, पता : खल्लपुर, फरीदपुर, बरेली।

आर्य निर्माणशाला में विभिन्न स्थानों पर निर्मात्री सभा के आचार्यों द्वारा आर्य व आर्या निर्माण

स्वामी व प्रकाशक आचार्य हनुमत्प्रसाद द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।